संचार–मीडिया और संस्कृति का परस्पर संबंध और परिवर्तन

ससिकला के.

असिस्टेंट प्रोफेसर, सेंट फ्रांसिस कॉलेज, कोरमंगला, बैंगलोर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18368493

ABSTRACT:

समाज की पहचान, चेतना और निरंतरता का आधार संस्कृति है। संस्कृति समाज के सामूहिक अनुभवों का परिणाम होती है। यह व्यक्ति को सामाजिक पहचान प्रदान करती है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मूल्यों का संचार करती है। संस्कृति का महत्व इस बात में निहित है कि यह समाज को दिशा, स्थिरता और निरंतरता प्रदान करती है। यह समाज की जीवन-पद्धति, भाषा, विश्वास, परंपराएँ, कला, साहित्य और नैतिक मूल्यों का समुच्चय है। संस्कृति स्थिर न होकर समय, परिस्थिति और तकनीकी विकास के साथ निरंतर परिवर्तित होती रहती है। इस परिवर्तन में संचार–मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मानव इतिहास में संचार के साधनों के विकास के साथ-साथ संस्कृति के स्वरूप में भी बदलाव आया है। मौखिक परंपरा से लेकर लिखित ग्रंथों, मुद्रण कला, रेडियो, टेलीविजन और अब डिजिटल मीडिया तक, प्रत्येक चरण ने समाज की सांस्कृतिक संरचना को प्रभावित किया है। इक्कीसवीं सदी में सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने संस्कृति को न केवल नया मंच दिया है, बल्कि उसे वैश्विक स्तर पर पुनर्परिभाषित भी किया है। मीडिया और संस्कृति के बीच गहरा, गतिशील और द्विदिश (दोनों ओर से प्रभावित करने वाला) संबंध है। मीडिया न केवल संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है, बल्कि उसे गढ़ने, रूपांतरित करने और प्रसारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

KEYWORDS:

डिजिटल मीडिया, सांस्कृतिक परिवर्तन, वैश्विक स्तर, लोक संस्कृति, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, सांस्कृतिक संरचना, समुच्चय।

प्रस्तावना

संस्कृति किसी भी समाज की आत्मा है, जिसमें उसके मूल्य, विश्वास, परंपराएँ, भाषा, कला और व्यवहार शामिल हैं। वर्तमान डिजिटल युग में संचार मीडिया समाज की सांस्कृतिक संरचना को गहराई से प्रभावित कर रहा है। संचार मीडिया एक मजबूत माध्यम है, जिसके जरिए सूचनाएँ, विचार और सांस्कृतिक तत्व व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचते हैं। आधुनिक युग में मीडिया ने संस्कृति के निर्माण, संरक्षण और परिवर्तन के तीनों पहलुओं को तेज कर दिया है। इस संदर्भ में संचार मीडिया और संस्कृति के रिश्ते का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। यह शोध लेख संचार मीडिया के विकास, उसके सांस्कृतिक प्रभावों और भारतीय समाज में हो रहे सांस्कृतिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

संस्कृति मानव समाज की जीवन पद्धति है। इसमें भौतिक और अव्यक्त दोनों तत्व शामिल हैं। संस्कृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचार के माध्यम से ही हस्तांतरित होती है। इसलिए, संचार और संस्कृति का संबंध स्वाभाविक है। संचार मीडिया वे तरीके हैं जिनसे संदेश प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक पहुँचते हैं। इनमें प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल मीडिया शामिल हैं। मीडिया का मुख्य कार्य सूचना देना, शिक्षा देना, मनोरंजन करना और जनमत का निर्माण करना है। संचार मीडिया समाज और संस्कृति का एक प्रभावशाली साधन है। पारंपरिक माध्यमों से लेकर आधुनिक डिजिटल मीडिया तक, संचार के स्वरूप में आए बदलावों ने सांस्कृतिक मूल्यों, व्यवहारों, भाषा, जीवनशैली और सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला है।

संस्कृति के संवाहक के रूप में संचार मीडिया

संचार मीडिया का विकास कई चरणों में हुआ है। प्रत्येक चरण ने संस्कृति पर नया असर डाला है:

- मौखिक संचार: लोककथाएँ, गीत, कहावतें।
- मुद्रित माध्यम: समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें।
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया: रेडियो, टेलीविजन।
- डिजिटल और सोशल मीडिया: इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, मोबाइल मीडिया।

मीडिया लोक संस्कृति, परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक मूल्यों को बड़े स्तर पर प्रदर्शित करता है। रेडियो और टेलीविज़न ने लोक

संगीत और लोक नृत्य को लोकप्रिय बना दिया। सिनेमा और धारावाहिकों ने सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों को आम लोगों के सामने रखा। सोशल मीडिया ने संस्कृति को स्थिर परंपरा से लेकर गतिशील और सहभागी प्रक्रिया में बदल दिया। डिजिटल पहचान, ऑनलाइन समुदाय, वर्चुअल उत्सव और साइबर संस्कृति आज के नए सांस्कृतिक आयाम हैं।

सोशल मीडिया ने भाषा सीखने के दायरे को बढ़ा दिया है। यह नए अवसर और प्रेरणा प्रदान करता है, लेकिन साथ ही सतर्कता और विवेक की भी मांग करता है। सोशल मीडिया ने भाषा को सरल, संक्षिप्त और मिश्रित बना दिया है। नई शब्दावली, संक्षिप्त रूप, मीम संस्कृति और इमोजी भाषा के नए रूप हैं, जो सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में शामिल हो गए हैं। लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाएँ और पारंपरिक कलाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से नए दर्शकों तक पहुँच रही हैं। इससे लोक संस्कृति को वैश्विक पहचान हासिल हुई है। सोशल मीडिया ट्रेंड्स, रील्स और वायरल कंटेंट ने युवा पीढ़ी की सोच, पहनावे और जीवनशैली को प्रभावित किया है। यह नई डिजिटल संस्कृति का प्रतीक है। विविध देशों और समाजों की संस्कृतियाँ आपस में जुड़ रही हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा है और 'ग्लोबल कल्चर' का विकास हुआ है।

संचार मीडिया और संस्कृति के बीच द्विपक्षीय संबंध है:

1. मीडिया संस्कृति को फैलाता है।
2. संस्कृति मीडिया की विषयवस्तु को प्रभावित करती है।
3. मीडिया के जरिए स्थानीय संस्कृति वैश्विक स्तर पर पहुँचती है और वैश्विक संस्कृति स्थानीय समाज में प्रवेश करती है।

आधुनिक मीडिया और सांस्कृतिक परिवर्तन

आधुनिक मीडिया ने सांस्कृतिक परिवर्तन की गति को बढ़ा दिया है। वैश्वीकरण के प्रभाव से विभिन्न संस्कृतियों का आपसी संवाद बढ़ा है, जिससे सांस्कृतिक मिश्रण और नई सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं। सोशल मीडिया ने व्यक्तियों को सांस्कृतिक उत्पादक और उपभोक्ता—दोनों बना दिया है। डिजिटल प्लेटफार्मों ने सांस्कृतिक पहचान को नए सिरे से परिभाषित किया है। ऑनलाइन समुदाय, वर्चुअल संस्कृति और डिजिटल अभिव्यक्ति ने पारंपरिक सांस्कृतिक सीमाओं को विस्तारित किया है। साथ ही, स्थानीय और क्षेत्रीय संस्कृतियों को वैश्विक पहचान मिली है।

मीडिया सांस्कृतिक जागरूकता, संरक्षण और संवाद को बढ़ावा देता है, लेकिन इसके नकारात्मक पहलू भी हैं—जैसे सांस्कृतिक समरूपता, उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक विकृति। इसलिए, मीडिया का समझदारी से उपयोग जरूरी है। मीडिया ने भाषा को सरल, संक्षिप्त और मिश्रित बना दिया है। सोशल मीडिया के कारण नई शब्दावली और अभिव्यक्ति की शैलियाँ विकसित हुई हैं। घरों में छोटे बच्चे से लेकर बड़े लोग टीवी और मोबाइल पर कार्यक्रम देख रहे हैं। इससे वे ज्ञान बढ़ाते हैं, कई भाषाएँ सीखते हैं, और अपनी शब्दावली का भंडार बढ़ाते हैं। टीवी, फिल्में और सोशल मीडिया लोगों के पहनावे, खान-पान और रहन-सहन को प्रभावित करते हैं। उपभोक्तावाद की संस्कृति को बढ़ावा मिला है।

डिजिटल और सोशल मीडिया ने संचार को त्वरित, संपर्कित और वैश्विक बना दिया है। लोक परंपराएँ, कला, साहित्य, भाषा और जीवन मूल्य सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट और वीडियो प्लेटफार्मों के माध्यम से नए रूपों में सामने आ रहे हैं। इससे सांस्कृतिक विविधता को नया मंच मिला है और हाशिए पर स्थित समुदायों की आवाज़ को अभिव्यक्ति का अवसर मिला है। विज्ञापन उपभोक्तावाद, ब्रांड संस्कृति और आधुनिक जीवनशैली का प्रचार करते हैं। इससे लोगों की सांस्कृतिक प्राथमिकताएँ बदलती हैं। पारंपरिक मूल्यों में बदलाव आया है। कुछ परंपराएँ कमजोर हुई हैं, जबकि समानता, स्वतंत्रता और आधुनिक सोच को बढ़ावा मिला है। युवाओं की सोच, रुचियाँ और आदर्श मीडिया से काफी प्रभावित हैं। सोशल मीडिया ने उनकी पहचान और अभिव्यक्ति के लिए नए मंच प्रदान किए हैं।

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में मीडिया ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ाया है:

- क्षेत्रीय संस्कृतियों को पहचान मिली।
- राष्ट्रीय एकता को बल मिला।
- पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भी बढ़ा।
- सांस्कृतिक विविधता को मंच प्राप्त हुआ।
- हाशिए पर के समुदायों की आवाज़ को पहचान मिली।
- कला, साहित्य और रचनात्मकता को नया विस्तार मिला।
- सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक संवाद बढ़ा है।

यह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक—दोनों रूपों में दिखाई देता है।

सकारात्मक प्रभाव:

- सांस्कृतिक विविधता को मंच मिला।
- हाशिए पर के समुदायों की आवाज़ को पहचाना गया।
- कला, साहित्य और रचनात्मकता को नया विस्तार मिला।
- सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक संवाद में वृद्धि हुई।

नकारात्मक प्रभाव:

- पश्चिमीकरण का अंधाधुंध अनुकरण।
- पारिवारिक और सामाजिक दूरियाँ।
- प्रदर्शन की संस्कृति।
- खान-पान और स्वास्थ्य पर प्रभाव।
- नैतिक मूल्यों का पतन।
- गलत सूचना और सांस्कृतिक तनाव।

विशिष्ट प्रभाव:

- भाषा: मातृभाषा की जगह "हिंग्लिश" या शॉर्टकट शब्दों का प्रयोग।
- त्योहार: श्रद्धा के बजाय केवल सेल्फी और दिखावे का माध्यम।
- रिश्ते: बड़ों का सम्मान और संयुक्त परिवार की भावना में कमी।
- मनोविज्ञान: दूसरों की "सजी-धजी" जिंदगी देखकर अपनी संस्कृति से हीन भावना।

चुनौतियाँ:

- सांस्कृतिक एकरूपता।
- परंपरागत लोक-संस्कृति का ह्रास।
- सांस्कृतिक बाज़ारीकरण और उपभोक्तावाद में वृद्धि।
- मौलिक परंपराओं का क्षरण।
- भ्रामक सूचना और सतही संस्कृति का प्रसार।
- आभासी संस्कृति के कारण वास्तविक सामाजिक संबंधों में कमी।

निष्कर्ष

संचार–मीडिया और संस्कृति का संबंध परस्पर निर्भर और निरंतर विकसित होने वाला है। मीडिया संस्कृति का दर्पण भी है और निर्माता भी। संतुलित मीडिया दृष्टिकोण अपनाकर सांस्कृतिक विविधता, मूल्यों और पहचान का संरक्षण संभव है। संचार–मीडिया ने संस्कृति को

व्यापक, गतिशील और वैश्विक बनाया है। यह न तो पूर्णतः सकारात्मक है और न ही पूर्णतः नकारात्मक। आवश्यकता इस बात की है कि मीडिया का उपयोग सांस्कृतिक संरक्षण, जागरूकता और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन के लिए किया जाए। संतुलित और जिम्मेदार मीडिया ही स्वस्थ सांस्कृतिक विकास का आधार बन सकता है।

सोशल मीडिया और संस्कृति के बीच संबंध गहरा और द्विपक्षीय है। सोशल मीडिया जहाँ संस्कृति को नया रूप देता है, वहीं संस्कृति सोशल मीडिया की सामग्री और दिशा को प्रभावित करती है। आवश्यकता है कि सोशल मीडिया का उपयोग सांस्कृतिक संरक्षण, सकारात्मक मूल्यों और सामाजिक समरसता के लिए विवेकपूर्ण ढंग से किया जाए, ताकि संस्कृति के नए आयाम समाज के लिए लाभकारी सिद्ध हों। "संचार–मीडिया न केवल संस्कृति का दर्पण है, बल्कि वह संस्कृति का निर्माता और परिवर्तक भी है।" सोशल मीडिया एक उपकरण है, इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे कैसे इस्तेमाल करते हैं। यदि हम अपनी जड़ों से जुड़े रहें और तकनीक का उपयोग केवल सूचना के लिए करें, तो हम अपनी संस्कृति को बचा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. नामवर सिंह – संस्कृति और आलोचना।
2. रामकुमार वर्मा – संस्कृति और संचार माध्यम, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. समकालीन शोध पत्रिकाएँ एवं ई-जर्नल्स।
4. मैक्लूहान, मार्शल – मीडिया और संचार सिद्धांत।

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.